2

हन्ना

मातृत्व का एक स्मारक
(1:1-2:21)

प्राचीन स्पार्टा देश के राजा ऐजसीलॉस द्वितीय (लगभग 444-360 ई.पू.) ने अपनी मृत्यु के समय आदेश दिया कि उसकी कोई मूर्ति न बनाई जाए। उसने यह भी कहा, ''यदि मैंने कोई अच्छा कार्य किया है, तो मेरा स्मारक वही है; लेकिन यदि मैंने कुछ किया ही नहीं है तो तुम्हारे बनाए हुए स्मारकों से कुछ नहीं होगा।'' स्मारकों की सही अवधारणा यही है कि पत्थर के बिना बने स्मारक ही सबसे अच्छे होते हैं! सबसे अच्छा स्मारक व्यक्ति के जीवन का प्रभाव तथा बोलचाल व व्यवहार से की गई उसकी अच्छी यादें होता है।

हन्ना नामक इस सुन्दर महिला में हम ऐसी मां को देखते हैं जिसका जीवन ''मातृत्व का एक स्मारक'' है। सदियों से वह बाइबल के छात्रों की प्रशंसा का पात्र है और उसे ''प्रार्थना करने वाली मां'' या ''परमेश्वर द्वारा दी गई आदर्श मां'' की संज्ञा दी जाती है। परन्तु उसकी ओर देखकर पवित्र शास्त्र में आप उसे सबसे भक्त स्त्रियों के साथ ही रखेंगे।

बाइबल से हमें हन्ना के बारे में इन ऐतिहासिक तथ्यों का पता चलता है। वह चौथी ऐसी महान स्त्री थी जिसके कोई संतान नहीं थी। इनमें से वही सबसे अधिक आत्मिक है। सारा हंसी थी; रिबका उदासीन थी; राहेल चिड़चिड़ी और गुस्सैल थी। जहां तक हम जानते हैं केवल हन्ना ने ही प्रार्थना के द्वारा ईश्वरीय सहायता चाही थी। हमारे पास हन्ना की पारिवारिक पृष्ठभूमि की कोई जानकारी नहीं है ज्योंकि उस समय केवल पुरुष के पूर्वजों का ही नाम लिखा जाता था। हम केवल वही जानते हैं जो 1 शमूएल में दर्ज है।

हन्ना एल्काना की पहली पत्नी थी। उसके बांझ होने के कारण एल्काना के लिए दूसरी पत्नी ढूंढ़ी गई थी। यह प्रबन्ध परमेश्वर की मूल योजना से मेल नहीं खाता था (उत्पत्ति 2:24; मलाकी 2:15; मत्ती 19:4)। एल्काना की एक से अधिक पत्नियां होने का परिणाम आशा के अनुरूप ही था। पनिन्ना हन्ना के प्रति उसके पति के विशेष मोह से जलती थी जिस कारण वह घमण्डी और अहंकारी हो गई थी। हन्ना के बांझपन पर वह उसे ताने मारती थी। हन्ना ने बदला लेने के लिए क्रोध से काम नहीं लिया बल्कि वह उसकी क्रूरताओं को धैर्य से सहती रही। शीलो में वार्षिक बलिदान के समय हन्ना हर साल बहुत दुःखी होती थी। इस बोझ को सहते-सहते वह थक चुकी थी। तनाव, अपमान सहते-सहते वह अपने आप को दोषी मानने लगी थी। मानसिक व शारीरिक रूप से परेशान बलिदान का बोझ छोड़कर

वह वेदी में शरण लेने के लिए चली गई।

यहूदी परम्परा के अनुसार, अब मन्दिर की पहले वाली शान नहीं रही थी। संदूक को कुछ पर्दों से ढंका हुआ था और तख़्ते के आस पास पत्थर की एक छोटी सी टूटी फूटी दीवार थी। द्वार पर महायाजक एली बैठा होता था। हन्ना चुपचाप आंगन में जाकर परमेश्वर के सामने अपने मन की पीड़ा बताने लगी। एली उसे देख रहा था और उसे लगा कि हन्ना ने कोई नशा किया हुआ है। एली ने हन्ना को कठोर शब्दों से डांटा, लेकिन हन्ना ने इसका जवाब बड़े भक्तिभाव से दिया। हन्ना की पीड़ा को समझते हुए, एली ने उसे आशीष दी कि उसकी गोद हरी हो जाएगी। मन्दिर से जाने के बाद हन्ना अपने मन को पूरी तरह से हल्का महसूस कर रही थी। उसे यह आश्वासन मिल चुका था कि वह एक बेटे को जन्म देगी और वह उसे परमेश्वर की सेवा के लिए अर्पण कर देगी।

हन्ना ने एल्काना के पास जाकर तुरन्त उसे यह खबर बताई। दोनों प्रार्थना का उत्तर मिल जाने के आश्वासन से आनन्दित हुए। बच्चे का जन्म हो गया और तीन साल तक उसका पालन-पोषण बहुत प्यार से किया जिससे वह इस्राएल के अन्तिम न्यायी और पहले नबी के रूप में सेवा के लिए तैयार हो सका।

तीन साल बाद उस छोटे बच्चे को वहां छोड़ने के लिए तैयार होकर हन्ना वार्षिक पर्व में फिर आई। मन्दिर में लौटकर, वह उसी स्थान पर खड़ी हो गई जहां तीन साल पहले आई थी। इसमें कोई संदेह नहीं कि अब भी उसके मन में वही दृश्य घूम रहा होगा (1:26, 27)।

शमूएल को अर्पण करने के समय उसने यहोवा की स्तुति और प्रशंसा के लिए एक गीत भेंट किया। उसने अपने नन्हें बालक को परमेश्वर की अनुग्रहकारी देखभाल में अर्पित कर दिया। प्रत्येक वार्षिक बलिदान के आने पर हन्ना शमूएल के लिए एक छोटा सा बागा बनाकर लाती थी। उस बागे या कोट की हर सिलाई में प्रेम पिरोया होता था। मातृत्व के इस अद्‌भुत स्मारक का यह संक्षिप्त सा इतिहास है!

हन्ना की यादगार या स्मृति

मातृत्व की सदा तक रहने वाली स्मृति को बनाने के लिए चरित्र तथा व्यवहार के विशेष गुण आवश्यक हैं।

परमेश्वर में विश्वास का गुण

संदेह तथा निराशा के समय हन्ना परमेश्वर की ओर मुड़ी (1:9-18; 2:1-10)। उसके विश्वास की इतनी चर्चा होती है कि उसे भुलाया नहीं जा सकता!

पहले तो, उसने इस विश्वास से कि परमेश्वर उसे एक बालक देगा अपना विश्वास दिखाया। जैसे-जैसे समय बीतता गया दुख के कारण उसकी निराशा बढ़ती गई। आश्चर्य, संदेह और कभी-कभी आशा की किरणों से उसके स्वप्न धूमिल हो गए थे। फिर भी उसने परमेश्वर पर अपना भरोसा कम नहीं होने दिया। बल्कि वह पूरी तरह से परमेश्वर पर निर्भर हो गई। अन्त में, जब उसकी सामर्थ से बाहर हो गया तो परमेश्वर के द्वार पर चली आई।

एली के पास से जाने के बाद, उसे परमेश्वर के उज़र पर पूरा भरोसा था (1:17)। हन्ना ने अपना बोझ प्रभु पर डाल दिया था। उससे जो कुछ भी बन पड़ा उसने किया और जो उसके वश से बाहर था वह उसने परमेश्वर पर छोड़ दिया।

फिर, उसने शमूएल को एली के सपुर्द करते हुए परमेश्वर में अपना विश्वास दिखाया (2:1–10)। पहला शमूएल 1:27 में भरोसे के बड़े उज़म शज़्द मिलते हैं: ''यह वही बालक है जिसके लिए मैं ने प्रार्थना की थी; और यहोवा ने मुझे मुंह मांगा वर दिया है।'' हन्ना का गीत (2:1 से) गहरी आस्था तथा विश्वास का प्रकटीकरण है। इसमें मन की कोमलता तथा समर्पण का वह आनन्द दिखाई देता है जो पुराने नियम में कहीं और नहीं मिलता और नये नियम में मरियम के गीत (लूका 1:46 से) की तरह है। हन्ना का गीत परमेश्वर को पवित्र, सामर्थी, बुद्धिमान और सर्वोच्च न्यायी के रूप में दिखाता एक महान विचार था।

तीसरा, उसने मन्दिर में शमूएल को छोड़ने में अपना विश्वास दिखाया (1:28; 2:11)। वह केवल तीन वर्ष का था! फिर भी हन्ना को उसे छोड़ते हुए डर नहीं लगा था ज़्योंकि उसने उसे परमेश्वर की देखभाल में छोड़ा था।

हन्ना का विश्वास हमें इब्रानियों 4:16 और 1 पतरस 5:7 जैसे पदों को समझने में सहायक है।

परीक्षाओं में धीरज रखने का गुण (1:7)

हमें नहीं मालूम कि वह कितने साल बांझ रही थी। इसमें कोई संदेह नहीं कि वह अज़्सर भजन संहिता 142:4ख के शज़्दों को महसूस करती थी, ''मेरे लिए शरण कहीं नहीं रही।'' ऐसा लगता था जैसे परमेश्वर का प्रबन्ध उसके अलावा बाकी सब लोगों के लिए हो। वह सोच सकती थी कि परमेश्वर ने कोई बहुत बड़ी गलती की है। पनिन्ना के ताने सुन-सुनकर शांत हन्ना का दुख कितना बढ़ता होगा, इसे समझना कठिन है। वह ताने सुनने के अलावा करती भी ज़्या ? धीरज धरकर वह परीक्षाओं को सहती रही। इस धीरज से अन्ततः उसे अपने विश्वास को बढ़ाने और अपनी आशाओं को न मिटने देने की सामर्थ मिली।

अपने बच्चों के प्रति समर्पण का गुण (1:22; 2:19)

उसने अपना आप शमूएल को दे दिया। सोच समझकर और लगातार उसने मां का दायित्व निभाया। वह उस पर प्रार्थना करती थी और उसका ध्यान परमेश्वर की ओर लगाती थी। हन्ना के लिए, अपने पुत्र का पालना-पोषण करना पूरी तरह से परमेश्वर को समर्पित एक सेवा थी। व्यवस्था की पुस्तकों (तालमुड) में एक ऐसी बात की ओर ध्यान दिलाया गया है जिसे आधुनिक महिलाओं के लिए याद रखना अच्छा होगा: ''सबसे पढ़ा लिखा कौन होता है ? वही जिसे उसकी मां ने पढ़ाया हो!'' हन्ना का समर्पण प्रति वर्ष लाए जाने वाले उस छोटे से कोट (बागा) से बड़ी अच्छी तरह दिखाया जा सकता है। मूलतः, यह ऊन का, सीवन रहित सिला हुआ अधोवस्त्र होता था। इसके ऊपर याजक एपोद डालते थे। हर वर्ष शमूएल को अपनी मां द्वारा उसके समर्पण के शानदार चिह्न लाने की उज़्मीद रहती होगी।

बलिदान का गुण (1:28)

वह अपना सबसे कीमती पुरस्कार परमेश्वर को देने को तैयार थी। उसने परमेश्वर को अपनी इच्छा स्वतन्त्रता से प्रकट करने की पेशकश की। अपने आप को परमेश्वर के प्रति नये सिरे से समर्पित करते हुए, उसने अपनी मन्नत में परमेश्वर की महिमा की इच्छा की। उसने स्वेच्छा और प्रेम से अपनी ही आवश्यकताओं का बलिदान दिया ताकि शमूएल को वह मिल सके जो उसके लिए सबसे अच्छा था।

मां का दायित्व निभाने का गुण (1:28)

अपने पुत्र के लिए उसका एक मात्र लक्ष्य था कि वह सदा के लिए परमेश्वर के घर में रहे (1:22)। उसने अपने बच्चे को एक धरोहर के रूप में देखा न कि पूरी तरह से उपहार के रूप में। उसकी जिम्मेदारियां बहुत बड़ी थीं और उसने इस बात को सुनिश्चित किया कि वह अपने कर्ज़व्य को पूरी निष्ठा से निभाए। उसने अपने दायित्व को केवल एक पुत्र का पालन-पोषण करने के रूप में नहीं बल्कि परमेश्वर को एक सेवक और एक अगुआ देने के रूप में भी देखा! ऐसी सोच आज हर मां के विचारों में होनी आवश्यक है। मां के रूप में हन्ना एक सफल स्त्री थी। हन्ना के बाद के जीवन से इस बात की पुष्टि होती है कि उसका पुत्र परमेश्वर की उपस्थिति में बड़ा हुआ था (2:21)।

यादगारी सबक

हन्ना द्वारा मां का दायित्व निभाने से, अनन्त महत्व के सबक मिलते हैं।

याद रखें : मां की भूमिका बड़ी महत्वपूर्ण है! जो विश्वास मां करती होगी वही उसके बच्चों में भी जाएगा। यदि उसका विश्वास मजबूत है, तो यह अंकुरित होकर बड़ा भी होगा। मां का स्वज़ाव बच्चों में भी दिखाई देगा। माताओ, ज़्या आप अपने बच्चों को परमेश्वर के प्रति संवेदनशीलता, निष्ठापूर्ण विश्वास, नि:स्वार्थ सेवा की भावना सिखा रही हैं ? माताओ, परीक्षा की घड़ी में ज़्या आपका बच्चा ''मां'' के विचारों में सुरक्षित महसूस करेगा ? बच्चे वही करते हैं जो वे देखते हैं। माताओं के लिए कोमलता, भज्ञि, और शुद्धता का प्रकटावा करना बहुत आवश्यक है जिससे उनके बच्चे उनके गुणों की नकल कर सकें!

याद रखें: स्त्री का परमेश्वर में शांत विश्वास और उसकी विनम्रता उसके पति तथा बच्चों के जीवन में मिठास लाएगी। परमेश्वर द्वारा दी गई अपनी भूमिकाओं को विनम्र शज़्दों और धीरजपूर्ण दयालुता के साथ निभाने वाली माताएं अपने घर को ''स्वर्ग'' बना लेती हैं!

याद रखें: माताओं को चाहिए कि वे अपने बच्चों का पालन-पोषण परमेश्वर के लिए करें! माताओं के लिए आवश्यक है कि वे अपने बच्चों में परमेश्वर के प्रति समर्पण की भावना डालें। उन्हें परमेश्वर तथा उसके अधिकार के बारे में प्रभावशाली बातें सिखानी चाहिए। धन्य है वह मां जो अपने बच्चों को परमेश्वर की इच्छा हर रोज पूरी करने तथा आचरण व व्यवहार में पवित्रता की सुन्दरता के आनन्द को दिखाती है।

सारांश

मूंगा चट्टानें शायद प्रकृति की सबसे बड़ी स्मारक हैं। उनकी सुन्दता और विशालता वर्णन से अपार है। वे उन पिंजरों से बनती हैं जिसे मूंगा जीवन भर छिपा रखते हैं। वास्तव में बड़ी चट्टानें उस जीवन का स्मारक हैं जो कभी जीया गया था। उनके अस्तित्व का यह खत्म न होने वाला रिकॉर्ड आने वाले युग के लिए एक चुनौती है। हन्ना जैसी परमेश्वर भज्त मां ऐसी ही एक यादगार है!

माताओ, इस बात को सुनिश्चित करे कि आपके जीवन आनन्द और प्रसन्नता के स्मारक होंगे। अपनी शज़्ति परमेश्वर में स्थिर विश्वास पैदा करने में, परीक्षाओं के समय में धीरज धरने में, दूसरों को समर्पण तथा बलिदान सिखाने में और सर्वशज़्तिमान परमेश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण में लगाओ। माताओ, बच्चों का पालन-पोषण करने में आपका उद्देश्य हन्ना जैसा ही हो, ''मैं ज़ी उसे यहोवा को अर्पण कर देती हूं; कि यह अपने जीवन भर यहोवा ही का बना रहे'' (1:28)।